© INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH PUBLICATION & SEMINAR
ISSN: 2278-6848 | Volume: 07 Issue: 03 | April - June 2016
Paper is available at www.jrps.in | Email : info@jrps.in

शाशवत जीवन मूल्य एवं समकालीन जीवन मूल्य : एक अध्ययन

शोधकर्ता : रोहताश

© iJRPS International Journal for Research Publication & Seminar

शाश्वत जीवन मूल्य और समकालीन जीवन मूल्य :जीवन मूल्य दो प्रकार के होते हैं–

1. शाश्वत मूल्य
2. समकालीन मूल्य

भारतीय दर्शन की दृष्टि से शाश्वत मूल्यों का स्थान सर्वोच्च रहा है। किसी भी साहित्य का अवलोकन करें तो प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल तक सम्पूर्ण साहित्य शाश्वत मूल्यों से अनुप्राणित है। मानव समाज को उत्तरोत्तर गति प्रदान करनेमें इन मूल्यों की अहम् भूमिका रही है। इन मूल्यों के अनुसरण के कारण ही उत्कृष्टचिंतन और आदर्श कर्तव्य की दिशा में मनुष्य को अग्रगामी एवं प्रगतिशील बनने मेंकापफी सहायता मिली है। हमको अपने अतीत की विरासत में मिले हैं। ये किसी विशेषवर्ग सम्प्रदाय के न होकर समस्त मानवता को विकसित करते हैं। डॉ. हुकुमचन्दराजपाल मूल्यों की शाश्वत्ता को स्वीकारते हुए कहते हैं–फ्वह 'जीवन–मूल्य' ही क्या जो परिस्थितियों के कारण नष्ट हो जाए?हाँ, इसके स्वरूप में थोड़ा बहुत परिवर्तन हो सकता है। वस्तुतः जीवन मूल्य यदिवास्तविकता में वे जीवन के मूल्य हैं तो उन्हें प्राचीनता एवं नवीनता की सीमा मेंबांध ही नहीं जा सकता। जीवन की तरह जीवन–मूल्य भी शाश्वत हैं। इनके अनुसार जो मूल्य शाश्वत हैं वह सदैव ही शाश्वत रहते हैं। उनमें परिवर्तनशीलता कभी नहीं आती है, जो मूल्य परिस्थितियों के कारण नष्ट हो जाये वह मूल्य ही नहीं है ये तो सदैव कालजयी रहते हैं।

Note :For Complete paper/article please contact us info@jrps.in
Please don't forget to mention reference number , volume number, issue number, name of the authors and title of the paper